...viewed Journal for M. Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College
VOLUME - 6 No. : 9 July - 2019
...2394-3580

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

Research Journal SRF Book Publication

International

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 4.2

Published by :
Swadeshi Research Foundation & Publication
Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	बालाघाट जिले की बैगा जनजाति में पोषण स्तर एवं स्वास्थ्य दशाओं का भौगोलिक अध्ययन	मीनाक्षी मेरावी	1-11
2	कबीर के काव्य में प्रेम और भक्ति	डॉ. संगीता त्यागी	12-13
3	स्वामी विवेकानंद के दर्शन में नव्य वेदान्त एवं धर्म का समावेशी चिंतन	कृति पटेल	14-16
4	पुरातत्व संग्रहालयों में प्रदर्शित दशावतारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन (मध्यप्रदेश के विशेष संदर्भ में)	रेनु चौधरी	17-22
5	सीहोर की ताम्राश्मीय संस्कृति	ज्ञानप्रकाश सिंह यादव	23-25
6	मासिक धर्म की समस्याओं पर योग का प्रभाव किशोरियों के संदर्भ में	डॉ. मनोज कुमार शर्मा लता पाटिल	26-29
7	स्वस्थ गर्भस्थ शिशु : योग ग्रामीण महिलाओं के संदर्भ में	डॉ. मनोज शर्मा रूबी श्रीवास्तव	30-34
8	भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका	डॉ. सुभाष कुमार सोनी	35-38
9	भारत में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन	सुभाष कुमार	39-45
10	विश्व व्यापार संगठन के प्रावधानों का भारतीय कृषि पर प्रभाव एवं उभरती चुनौतियाँ	डॉ. प्रियंका दुबे	46-51
11	मध्यप्रदेश के विभिन्न जिलों में महिलाओं की स्थिति	डॉ. मंगलेश्वरी जोशी चाँदनी जैन	52-53
12	73 वें संविधान में पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका	डॉ. राधिकेश जोशी	54-56
13	बाल अपराध के प्रमुख कारण	डॉ. विश्वारा चौहान गीता परतती	57-60
14	महाभारत काल में राजा का स्वरूप	मंजू अवस्थी ज्योति शर्मा	61-64
15	महेश्वर एवं ओंकारेश्वर नदियों के संरक्षण पर सरकार के विभिन्न कार्यक्रम	डॉ. पी.डी. झानानी श्याम सिन्हा	65-68
16	असंगठित क्षेत्र में न्यूनतम मजदूरी की विभिन्न स्थिति	डॉ. मोहम्मद नजमी विपिन सोनी	69-71
17	कमलेश बख्शी के उपन्यासों में अस्मिता की तलाश	ममता सोलंकी	72-74
18	शिल्पी श्री हरि श्रीवास्तव जी की कला यात्रा	तनु दुबे डॉ. (श्रीमती) किरण शुक्ला भूपेन्द्र निगम	75-78
19	भारत में संचार प्रौद्योगिकी का विकास	डॉ. नुपूर निखिल देशकर अंकित पाण्डेय	79-81
20	दरभंगा जिला में कृषि विविधीकरण की सार्थकता	अनामिका कुमारी प्रो. हिमांशु शेखर	82-84
21	संस्कृत शिक्षण में अधुनिक मूल्यांकन पद्धतियों का प्रयोग	डॉ. रश्मि जैन	85-89
22	भगिनी निवेदिता के शैक्षिक विचार	योगेश कुमार सिंह	90-94

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 9 July 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact Factor - 4.2 Research Journal

भगिनी निवेदिता के शैक्षिक विचार

योगेश कुमार सिंह
(अतिथि शिक्षक), शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर वि.वि. सागर (म.प्र.) (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

सारांश :– भगिनी निवेदिता ने भारतवर्ष को स्वदेश तथा भारतवासियों को स्वजन के रूप में स्वीकार किया था। भारत के प्रति उनका कितना अवदान है, यह अभी तक हम पूर्ण रूप से समझ नहीं पाये हैं। भविष्य में यदि कभी समझ पाएँगे तो हम आश्चर्यचकित होकर सोचेंगे कि क्या ऐसा चरित्र भी सम्भव है? आज से लगभग सौ वर्ष पहले स्वामी विवेकानन्द के आह्वान से वे भारतवर्ष आई थीं तथा उन्होंने इस देश की बालिकाओं को राष्ट्रीय धारा के अनुसार शिक्षा देना आरम्भ किया था।

भगिनी निवेदिता का जीवन तड़ित के समान तेजस्वी और तूफान के सदृश्य वेगवान था। वे अपने छोटे से जीवन काल में जो कुछ भी इस देश भारत के लिए, भारतीय समाज के लिए, भारतीय महिलाओं के लिए कर गई वह आगामी अनेक शताब्दियों तक विश्व के इतिहास प्रवाह को दिशा और गति प्रदान करता रहेगा। हम उन्हें एक महान शिक्षिका, समाज सुधारिका, लेखिका, विचारक, वक्ता, मानव प्रेमी और दूरदर्शी अनेक विशेषणों से विभूषित करें तो वह भी कम ही होगा। प्रस्तुत आलेख में भगिनी निवेदिता शैक्षिक विचारों का अध्ययन किया गया है।

जीवन परिचय :– मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल के नाम से जानी जाने वाली भगिनी निवेदिता का जन्म उत्तर आयरलैण्ड के टायरोन (Tyrone) जिले के डुंगैनन (Dungannon) नामक छोटे–से गाँव में 28 अक्टूबर, 1867 ई0 को हुआ था। उनके पिता सेमुएल रिचमण्ड नोबल तथा माता मेरी इसाबेल। मात्र दस वर्ष की छोटी आयु में उनके पिता की मृत्यु के उपरान्त नाना हैमिल्टन ने लालन पालन का दायित्व निभाया। हैमिल्टन आयरलैण्ड के स्वतन्त्रता आन्दोलन के एक विशिष्ट नेता भी थे।

पैत्रिक प्रभाव से मार्गरेट अछूति नहीं रही तथा इनके चरित्र में सत्यनिष्ठा, धर्म के प्रति अनुराग, देश के प्रति आत्मबोध तथा राजनीति के प्रति निष्ठा का समन्वय दृष्टिगोचर हुआ था।

निवेदिता का अध्ययनकाल लन्दन के एक चर्च के अधीनस्थ आवासीय विद्यालय में कठोर नियम–श्रृंखला के बीच बीता। तीक्ष्ण मेधावी छात्रा मार्गरेट विद्यालय के पाठ्यक्रम के अतिरिक्त अन्य विषयों का भी काफी अध्ययन किया करती थीं। साहित्य, संगीत, कला, भौतिकशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र–सभी विषयों में उनकी समान उत्सुकता थी।

सफलता के साथ स्कूल की शिक्षा समाप्त कर मात्र सत्रह वर्ष की आयु में मार्गरेट ने एक शिक्षिका का जीवन ग्रहण किया। कुछ दिनों में ही विम्बलडन में एक विद्यालय खोलकर उन्होंने अपनी पद्धति से शिक्षा देना शुरू किया। अल्पकाल में ही एक सुशिक्षिका के रूप में उनकी प्रसिद्धि चारों ओर फैल गयी। इसके साथ ही विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में वे लेख भी लिखती रहीं। शीघ्र ही वे लन्दन के विद्वत्–समाज में एक शक्तिशाली लेखिका के रूप में प्रतिष्ठित हुईं। चर्च के अधीन वे नियमित सेवाकार्य भी करती। धर्म के प्रति उनका आकर्षण तो बचपन से था ही। व्यावहारिक जीवन में काफी सफल होने पर भी चर्च के अधीनस्थ प्रथागत धर्म–जीवन से उन्हें वास्तविक धर्मजीवन का पथ खोज निकालने की चेष्टा की। शान्ति के अभाव वे निराश थी।

स्वामी विवेकानन्द जी का निवेदिता पर प्रभाव :– भारतीय सन्यासी स्वामी विवेकानन्द 1896 ई0 के नवम्बर महीने की एक शाम लन्दन के एक कुलीन परिवार के यहाँ स्वामी विवेकानन्द के धर्म–व्याख्या एवं व्यक्तित्व से मंत्रमुग्ध हो गई। जिससे निवेदिता के जीवन में एक नया मोड आया। इसके बाद निवेदिता, स्वामीजी की प्रत्येक व्याख्यन बड़े ही मनोयोग से सुनती और अपना संशय स्वामी जी के समक्ष प्रश्नों के माध्यम से दूर करती। अन्ततोगत्वा उन्हें विश्वास हो गया कि जिस धर्मजीवन की खोज में वे इतने दिनों तक दिग्भ्रान्त थीं, उसका ठीक पता बताने में स्वामी विवेकानन्द सर्वसमर्थ है।

भगिनी निवेदिता और स्वामी विवेकानन्द के मध्य शिक्षा संबंधी वार्ता का मुख्य विषय साहित्य, कला,

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. – 6, No. - 9 July 2019
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact Factor - 4.2 Research Journal

इतिहास, काव्य और ग्रंथों व उपनिषदों की चर्चा। निवेदिता स्वामी जी के साथ शिक्षा संबंधी कार्यों की रूपरेखा जानने व सुझाव सुनने के लिए सदैव आतुर रहती थी और स्वामी जी उनके कार्यों में योगदान देने हेतु तत्पर रहते थे। अध्यापन कला में प्रवीण और बाल मनोविज्ञान की ज्ञाता भगिनी निवेदिता के लिए शिक्षा पर वार्ता रूचिकर विषय था।

शैक्षिक विचार :– शिक्षा में पाश्चात्य प्रयोगों एवं शिक्षाशास्त्र की विभिन्न शिक्षण विधियों से भगिनी निवेदिता पूर्णतः परिचित थी। परन्तु भारतीय परिवेश से अभि अछूति थी। लेकिन निवेदिता को भारतीय परिवेश को समझते देर नहीं लगी। अतः भगिनी निवेदिता अहंकारिक और अवसादमयी शिक्षा की बात नहीं करती थी, अपितु वे क्रियात्मक एवं रचनात्मक शिक्षा की अपेक्षा करती थी। जब तक वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नवीन प्राण–शक्ति का संचार नहीं किया जाता तब तक भारत के नवनिर्माण की दिशा में प्रयत्न करना व्यर्थ है। इस प्रकार से शिक्षा के बारे में निम्न बातों को बताया–

- शिक्षा के क्षेत्र में बालिकाओं को बालकों के समान शिक्षा दी जानी चाहिए।
- शिक्षा को व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकास में योग देना चाहिए।
- धार्मिक शिक्षा पुस्तकों से नहीं वरन् व्यवहार, आचार और संस्कारों द्वारा दी जानी चाहिए।
- पाठ्यक्रम में लौकिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के विषयों को स्थान दिया जाना चाहिए।
- स्त्री शिक्षा का केन्द–धर्म होना चाहिए क्योंकि स्त्रियाँ ही धर्मधारिणी और धर्म पालिका होती है।
- हमें प्राविधिक शिक्षा और अन्य सब विषयों का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, जिससे हमारे देश के उद्योगों की उन्नति हो।
- शिक्षा गुरू के गृह में रहकर प्राप्त करनी चाहिए और शिक्षक तथा छात्र में महिमा, गरिमा और मधुरिमा का संबंध होना चाहिए।
- जनसाधारण में शिक्षा का प्रचार करना चाहिए क्योंकि राष्ट्र की प्रगति उसी अनुपात में होती है जिसमें जनसाधारण को शिक्षा मिलती है।
- उसी शिक्षा को सच्ची शिक्षा कहा जाना चाहिए जिससे चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी बनें।
- राष्ट्रीय और मानवीय शिक्षा, घर से प्रारम्भ होनी चाहिए जहाँ बच्चे अपने संबंधों से प्रेम करना सीखे और बाद में समाज के सदस्य बनकर अपने छोटे से प्रेम को विश्व प्रेम में बदल दें।
- पुस्तकों का अध्ययन ही शिक्षा नहीं है।
- ज्ञान व्यक्ति के मन में विद्यमान है वह स्वयं ही सीखता है।
- चित्त की एकाग्रता की शक्ति ज्ञान प्राप्त करने की कुंजी है। इस शक्ति को विकसित करने हेतु ब्रह्मचर्य आवश्यक है।
- मन, वचन, कर्म का शुद्धि आत्म नियन्त्रण हैं।
- शिक्षा बालक का शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास करे।

भगिनी निवेदिता ने भी स्वामी जी की भाँति शिक्षा को ही राष्ट्र का उन्नायक माना है तथा निम्न बातों को बताया कि–

- चित्त की वृत्तियों को योग द्वारा निरोध करना।
- मन को केन्द्रीयकरण विधि द्वारा विकसित करना।
- ज्ञान को व्याख्यान, तर्क, विचार–विमर्श, स्वानुभव तथा रचनात्मक कार्यों एवं उपदेशों द्वारा अर्जित करना।
- शिक्षक के गुणों तथा चरित्र बुद्धि द्वारा अनुकरण करना।
- बालक को व्यक्तिगत निर्देशन तथा परामर्श विधि के द्वारा उचित मार्ग की ओर अग्रसर करना।
- शिक्षा द्वारा अच्छे विचारों का निर्माण होना चाहिए।
- शिक्षा चरित्र गठन में सहायक हो। हमारी इच्छा शक्ति सबल करने और उसके माध्यम से हम चरित्र का उन्नयन कर सकें।
- हमारी शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का निर्माण करना होना चाहिए। सारी शिक्षा का अन्तिम लक्ष्य मनुष्य का विकास करना है। जिस प्रशिक्षण से मनुष्य की इच्छा शक्ति का प्रकाश फलदायी हो, वही शिक्षा है।
- शिक्षा द्वारा छात्रों में श्रद्धा की निष्पत्ति होनी चाहिए अर्थात् अपनी अन्तर्निहित सुप्त शक्तियों का ज्ञान प्राप्त करना और इसके लिए स्वयं पर दृढ़ विश्वास रखना आवश्यक है।

- राष्ट्र सेवा की शिक्षा का उद्देश्य मानव में मानव प्रेम, समाज सेवा, विश्व चेतना और विश्व बन्धुत्व के गुणों का विकास करना।
- मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, भावात्मक, धार्मिक, नैतिक, चारित्रिक, सामाजिक और व्यावसायिक विकास करना।
- मनुष्य को आध्यात्मिक और मुक्ति के मार्ग के संबंध में चेतना पैदा करना और अपनी शक्तियों का उपयोग करना।
- मनुष्य में आत्मविश्वास, आत्मश्रद्धा, आत्मत्याग, आत्मनियन्त्रण, आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान आदि लौकिक सद्गुणों के विकास हेतु प्रयत्नशील रहना।

भगिनी निवेदिता को तत्कालीन शिक्षण विधि में कोई आस्था नहीं थी। उनके अनुसार ज्ञान की प्राप्ति का केवल एक ही मार्ग है और वह है एकाग्रता द्वारा ही शिक्षण हो सकता है किसी अन्य विधि द्वारा नहीं।

1. भगिनी निवेदिता शिक्षण पद्धति में पुस्तकीय शिक्षा की प्रधानता को नकारती है उनके अनुसार शिक्षा को सीखने में स्वाभाविकता का महत्व है अतः बालक में ज्ञान को ठूसना नहीं चाहिए। शिक्षा ग्रहण करने में अनुचित दबाव नहीं डालना चाहिए इससे बालक का स्वाभाविक विकास अवरूद्ध हो जाता है। शिक्षा को पर्याप्त सहज व स्वाभाविक वातावरण में सीखना चाहिए जिससे विद्यार्थी को चिंतन व मनन की पर्याप्त स्वतंत्रता दी जानी चाहिए इससे बालक का स्वाभाविक विकास अवरूद्ध हो जाता है।
2. भगिनी निवेदिता शिक्षण पद्धति में एक और विशेष बात को महत्वपूर्ण मानती है वो यह कि विद्यार्थी कभी वैसा ही रास्ता अपनाते हैं अतः गुरू को अपना सदचरित्र व सद्व्यवहार हर वक्त प्रदर्शित करना चाहिए ताकि छात्र के सीखने की प्रक्रिया हर वक्त होती रहे इस प्रकार अनुकरण विधि द्वारा शिक्षक के उत्तम चरित्र, गुणों आदि का अनुकरण होता रहे।
3. भगिनी निवेदिता व्यक्तिगत समस्याओं के समाधानार्थ निर्देशन एवं परामर्श को भी एक उत्तम पद्धति मानती है। इस विधि से जहाँ एक ओर पारस्परिक संबंध दृढ़ होते हैं वहीं दूसरी ओर सहयोग की भावना द्वारा कार्य सफलता एवं तीव्रता से समाप्त हो जाता है। जैसा कि आधुनिक युग में छात्रों को निर्देशन व परामर्श की अत्यधिक आवश्यकता होती है।
4. भगिनी निवेदिता शिक्षण विधि में प्रयोगात्मक विधि को भी महत्व देती हैं। विद्यार्थी करके सीखने पर ज्ञान को स्थायी बना लेते हैं और वह लम्बे समय तक चित्त में स्थायी रहता है। उनके अनुसार बालिकाएँ करके सीखने में गृह विज्ञान जैसे विषय को प्रयोग में ला सकती है। जिसमें सिलाई, कढ़ाई, बुनाई, गृह सज्जा, पाक कला आदि विषय आते हैं जो उन्हें भविष्य हेतु तैयार करते हैं और बालकों को कृषि जैसे पाठ्य विषय को करके सीखने की पद्धति का प्रयोग करना चाहिए।
5. भगिनी निवेदिता भ्रमण को भी अत्यन्त उपयोगी विधि मानती हैं। उनका विचार है कि भ्रमण से सम्पर्क, ज्ञान, अनुभव व निरीक्षण शक्ति बढ़ती है और साथ ही इससे समाज–सेवा व विश्व–बन्धुत्व की भावना का विकास भी सहजता से किया जा सकता है।
6. योग विधि द्वारा चित्त की वृत्तियों का निरोध करना। ब्रह्मचर्य से बौद्धिक और आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है। वासनाओं को वश में करना चाहिए और इसे आध्यात्मिक शक्ति में परिवर्तित कर देना चाहिए। ब्रह्मचर्य से स्मृतिशक्ति का विकास होता है, प्रबल कार्यशक्ति प्राप्त होती है। अमोघ इच्छा शक्ति का विकास होता है।
7. तर्क, व्याख्यान, विचार–विमर्श, उद्देश्य विधि आदि द्वारा ज्ञान का अर्जन करना।

भगिनी निवेदिता द्वारा किसी एक शिक्षा पद्धति को विशेष रूप से महत्व नहीं दिया गया है वरन् समय व परिस्थितियों के अनुसार पृथक–पृथक पद्धतियों को ग्रहण कर शिक्षा का कार्य सम्पन्न करना चाहिए।

भगिनी निवेदिता ने शिक्षा को सम्पूर्ण जीवन का एक अंग मानकर उस पर आध्यात्मिक दृष्टि से अदभुत प्रेरणाप्रद सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया है। देश को सफल बनाने के लिए जिन–जिन विषयों को पढ़ाने की आवश्यकता हो, वे विषय अवश्य पढ़ाये जायें। वेदों का अध्ययन आवश्यक है। श्री रामचन्द्र, श्री कृष्ण, हनुमान आदि के जीवन चरित्र का अध्ययन करना है। संगीत भी सीखना है किन्तु खेल और करताल से देश का कल्याण नहीं होगा अतः नागाड़े, बिगुल आदि ओजस्वी वाद्य यंत्रों को बजाना है। धार्मिक शिक्षा भी देनी है किन्तु आडम्बर से दूर रहना है। धर्म का क्रियात्मक अनुभव होना

आवश्यक है। केवल बौद्धिक प्रशिक्षण से छात्रों में मनुष्यता के गुणों का प्रादुर्भाव नहीं होता अतः विशिष्ट भावों को जागृत करना आवश्यक है। विद्यालयों में किसी मत या सम्प्रदाय की शिक्षा न देकर सभी धर्मों के सारभूत तत्वों की जानकारी दी जानी चाहिए। प्राचीन धर्म में नास्तिक वह है जो स्वयं में विश्वास नहीं करता इसलिए धर्म को पाठ्यक्रम में स्थान मिलना चाहिए।

पाठ्यक्रम में सत्य का समावेश होना चाहिए। सत्य आत्मा का स्वभाव है, सत्य में जीवन शक्ति होती है वह बलप्रद पवित्र और ज्ञान स्वरूप होती है। सत्य शक्ति देता है, हृदय के अन्धकार को दूर करता है, स्फूर्ति देता है, प्रकाश देता है। छात्रों को भाषा और साहित्य को भी शामिल करना। काव्य और कला की भी शिक्षा देनी है। विदेशी भाषा की अपेक्षा स्वदेशी भाषाओं पर पहले अधिकार करना चाहिए। मातृभाषा पर अधिकार के बाद विदेशी भाषा का अध्ययन लाभप्रद हो सकता है।

पाठ्यक्रम परिवर्तनशील होना चाहिए। पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार और उपयोगी हो। पाठ्यक्रम उच्च नैतिकता एवं उदात्त आदर्शों से युक्त होना चाहिए जिसके द्वारा हृदय को सुसंस्कृत बनाने की प्रेरणा मिले। पाठ्यक्रम में वर्तमान, भविष्य और अतीत किसी की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए।

गुरू शिष्य संबंध :– स्वामी विवेकानन्द के कार्यो, विचारों से भगिनी निवेदिता पूर्णतः प्रभावित थी अतः विवेकानन्द के गुरू–शिष्य संबंधी विचारों इस प्रकार बताया है–

भगिनी निवेदिता के अनुसार शिक्षा गुरू–गृह वास के आधार पर होनी चाहिए जिसमें शिष्य गुरू के गृह स्थान पर ही रह कर शिक्षा ग्रहण करें। शिक्षक के तीन विशेष गुण बताए हैं। प्रथम गुण है उसका शास्त्र ज्ञान। अच्छा शिक्षक शास्त्रों के मर्म को जानता है। दूसरा गुण है निष्णाता– उसे हृदय और मन से पवित्र होना चाहिए। शिक्षक का चरित्र अग्नि के समान प्रकाशवान हो। चित्त की शुद्धता के बिना वह छात्रों में आध्यात्मिक शक्ति का संचार नहीं कर सकता। तीसरा गुण है कि शिक्षक को धन, नाम या यश संबंधी स्वार्थ सिद्धि के लिए धर्म शिक्षा नहीं देनी चाहिए अतः गुरू में त्याग भाव आवश्यक है।

शिक्षक में अपने छात्रों के प्रति [illegible] सहानुभूति का भाव होना चाहिए ताकि शिक्षा ग्रहण का वातावरण आनन्दमयी बना रहे। इसी के साथ शिष्य के लिए भी कुछ आवश्यक गुण बताये हैं शिष्य को ज्ञान का पिपासु और जिज्ञासु होना चाहिए। शिष्य के भीतर जिज्ञासा ही वह मूल चाह है जिससे वह ज्ञान प्राप्त करता है और वह वही पाता है जो वह चाहता है। शिष्य में शुद्धता, विचार वाणी और कर्म की पवित्रता होनी चाहिए। शिष्य में लगन के साथ परिश्रम करने की इच्छा व शक्ति होनी चाहिए। शिष्य को गुरू में अटूट विश्वास होना। गुरू के प्रति विश्वास, नम्रता, विनय और श्रद्धा के बिना छात्र शिक्षा ग्रहण नहीं कर सकता। गुरू के प्रति श्रद्धा भाव ही शिष्य में स्वतंत्र चिन्तन की शक्ति पैदा करती है।

जहाँ तक ऑकड़ों का प्रश्न है हम आज पहले से अधिक शिक्षित हैं। शिक्षा का प्रचार–प्रसार भी बढ़ा है। जिन अंचलों में शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं थी, वहाँ शिक्षा की व्यवस्था हुई है। प्रतिदिन ही अनेक स्कूल–कॉलेज खुल रहे हैं और प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक की सुविधाएं और अवसर लोगों को उपलब्ध कराये जा रहे हैं।

लेकिन यह प्रयास आज का नहीं यह निरन्तर किये गये प्रयासों का परिणाम है जो आज दिखाई दे रहा है। शिक्षा के लिए बताए गए महत्वपूर्ण बिन्दुओं की प्रासंगिकता आज भी विद्यमान है चाहे वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कहीं न कहीं हमें मिल जाती है। चाहे वह शिक्षण विधि से हो, बालक के विकास से हो, शिक्षण व्यवस्था से हो, सांस्कृतिक एवं चारित्रिक हो, चाहे पाठ्यक्रम हो वह विद्यमान है। अतः कहा जा सकता है कि, भगिनी निवेदिता भारत के लिए एक ऐसी प्रकाशित दीप है जो सबको सदैव प्रकाशित करती रहेगी।

निष्कर्ष :– स्वामी विवेकानन्द निर्देश था : 'भविष्य की भारत–सन्तानों के लिए तुम एकाधार में जननी, सेविका और सखा बन जाओ।' अपने गुरूदेव के इस निर्देश का उन्होंने अक्षरशः पालन किया था। भारत की लज्जा और गर्व निवेदिता की व्यक्तिगत लज्जा और गर्व बन गये थे। किसी भी विदेशिनी ने भारत के धर्म, संस्कृति, दुःख और स्वप्न को निवेदिता की तरह अपना समझकर ग्रहण नहीं किया था। किसी भी विदेशिनी ने भारत के जनसाधारण के प्राणों की आशा–आकांक्षाओं, भारत की

अन्तरात्मा के सत्यस्वरूप को इतनी सूक्ष्मता से समझा न था। दरअसल, भारत के प्रति उनका आत्मनिवेदन इतना आन्तरिक, सर्वांगीण और परिपूर्ण था कि उनको विदेशिनी कहना ही मानों उनका अपमान करना था। उन्होंने कभी भारत की आवश्यकता, भारतीय नारी, जैसे शब्दो का उच्चारण नहीं किया, वे कहतीं हमारी आवश्यकता हमारी नारी। भारतवर्ष की बात उठते ही वे भाव–विभोर हो जाया करतीं। जपमाला लेकर वे भावस्थ हो जप करतीं भारतवर्ष, भारतवर्ष, भारतवर्ष! माँ, माँ, माँ!

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. सिस्टर निवेदिता, 'नोट्स ऑफ सम वन्डरिंग्स' (1962)
2. सिस्टर निवेदिता, 'द मास्टर एज आई सॉ हिम', (1910)
3. सिस्टर निवेदिता, 'हिन्टस ऑन नेशनल एजूकेशन इन इण्डिया (1966)
4. प्रवराजिका आत्मप्राण : विवेकानन्द की सिस्टर निवेदिता (1961)
5. प्रवराजिका आत्मप्राण : सिस्टर निवेदिता की कहानी (1910)
6. सिस्टर निवेदिता : मैने उनको मास्टर के रूप में देखा (1911)
7. सिस्टर निवेदिता : भारत पुस्तिका में राष्ट्रीय शिक्षा के संकेत, कोलकाता, बारहवा पुनर्मुदण संस्करण (1966)
8. चक्रवर्ती, वसुधा : सिस्टर निवेदिता, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया (2002)
9. भारत की निवेदिता, स्वामी नित्याज्ञानानन्द और स्वामी उरूक्रमानन्द,रामकृष्ण मिशन इन्स्टीटयूट ऑफ कल्चर, गोल पार्क, कोलकाता– 2003 प्रथम हिन्दी संस्करण
10. Volume 2: The Web of Indian Life; an Indian Study of Love and Death; Studies from an Eastern Home; Lectures and Articles. ISBN AOE005-2
11. Volume 3: Indian Art; Cradle Tales of Hinduism; Religion and Dharma; Aggressive Hinduism. ISBN AOE005-3
12. Volume 4: Footfalls of Indian History; Civic Ideal and Indian Nationality; Hints on National Education in India; Lambs among Wolves. ISBN AOE005-4
13. Volume 5: On Education; On Hindu Life, Thought and Religion; On Political, Economic and Social Problems; Biographical Sketches and Reviews. ISBN AOE005-5